# पुष्टिभक्ति

पुष्टि = जीव के हित की साधिका है और यह पोषण भगवान के अनुग्रह को कहते है

भक्ति = भगवत्कार्योपयोगिनी,पूर्ण कृपा होने पर होती है

भज् + क्तिन् = सेवा + प्रेम = प्रेमपूर्विका सेवा

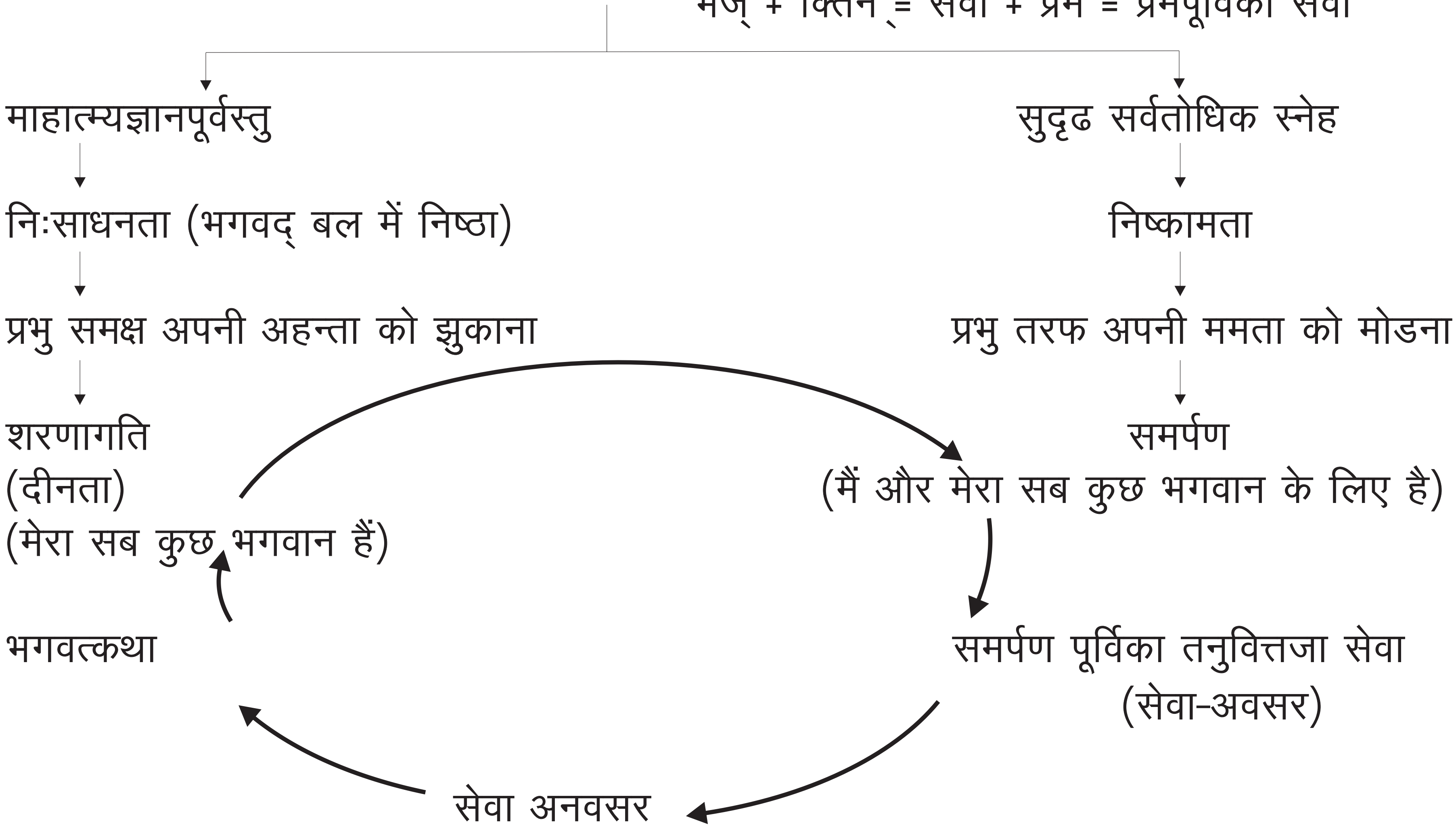
माहात्म्यज्ञानपूर्वस्तु
निःसाधनता (भगवद् बल में निष्ठा)
प्रभु समक्ष अपनी अहन्ता को झुकाना
शरणागति
(दीनता)
(मेरा सब कुछ भगवान हैं)
सुदृढ सर्वतोधिक स्नेह
निष्कामता
प्रभु तरफ अपनी ममता को मोडना
समर्पण
(मैं और मेरा सब कुछ भगवान के लिए है)
समर्पण पूर्विका तनुवित्तजा सेवा
(सेवा-अवसर)
सेवा अनवसर
भगवत्कथा

# यमुनाष्टकस्तोत्र

| | |
|---|---|
| क्रमांक | १ |
| ग्रन्थ का नाम | श्री यमुनाष्टकस्तोत्र |
| श्री महाप्रभुजी के श्री अंग का स्वरूप | दक्षिण अंग |
| श्लोक संख्या | ९ |
| रचना काल संवत | १५४९ |
| रचना स्थान | गोकुल |
| वर्णित विषय | श्री यमुनाजी की स्तुति |
| किस भगवदीय के लिए प्रकट हुआ | श्री यमुनाजी |
| भागवत स्कन्ध | २ |
| अवस्था | बाल्यावस्था |
| पुष्टिभक्ति का अङ्ग | भक्ति |

## श्री यमुनाजी = श्रीकृष्ण की कृपाशक्ति का साक्षात आधिदैविक स्वरूप

## श्री यमुनाजी की स्तुति

### पुष्टिप्रभु द्वारा स्थापित यमुनाजीमें अष्टविध ऐश्वर्य

१) सकल सिद्धिओ के हेतुरूप
२) भगवद् रति को बढ़ानेवाली
३) भगवत् सम्बन्ध में अन्तरायभूत प्रतिबन्ध को दूर कर, प्रभु के अनुभव करपाने की पवित्रता प्रदान करनेवाली
४) भगवान के समान गुणधर्मवाली
५) भक्तो के कलिदोषो को दूर करनेवाली
६) पुष्टिजीवो को प्रभु के प्रिय बनानेवाली
७) भगवत् सेवा में अलौकिक सामर्थ्यरूप तनुनवत्व को सम्पादन करनेवाली
८) प्रभु के लीलासामयिक श्रमजल कणके संग पुष्टिजीवो का सम्बन्ध सम्पादित करानेवाली

### यमुनाष्टक स्तोत्र के पाठ का फल

१) सर्वपापक्षय
२) सकल सिद्धि की प्राप्ति
३) मुकुन्दरति
४) मुकुन्द की प्रसन्नता
५) स्वभावविजय

# बालबोध

| | |
|---|---|
| क्रमांक | २ |
| ग्रन्थ का नाम | बालबोध |
| श्री महाप्रभुजी के श्री अंग का स्वरूप | मुखारविन्द |
| श्लोक संख्या | १९ १/२ |
| रचना काल संवत | १५५० |
| रचना स्थान | पुष्करराज |
| वर्णित विषय | लौकिक मोक्ष पुरुषार्थ का निरूपण |
| किस भगवदीय के लिए प्रकट हुआ | नारायणदास कायस्थ |
| भागवत स्कन्ध | ४ |
| अवस्था | बाल्यावस्था |
| पुष्टिभक्ति का अङ्ग | आश्रय |

# पुरूषार्थ : पुरुष की चाहना

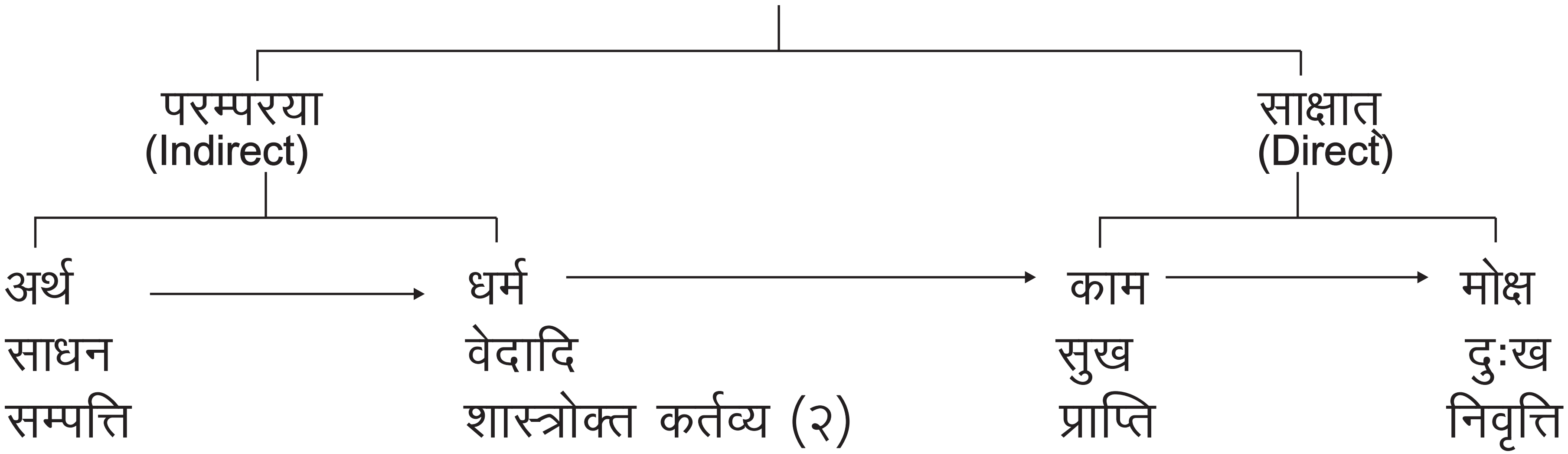

परम्परया
(Indirect)

साक्षात
(Direct)

अर्थ → धर्म → काम → मोक्ष

अर्थ
साधन
सम्पत्ति

धर्म
वेदादि
शास्त्रोक्त कर्तव्य (२)

काम
सुख
प्राप्ति

मोक्ष
दुःख
निवृत्ति

साधन → साध्य

ग्रन्थ सन्दर्भः

१) सर्वनिर्णय निबन्ध १६
श्रीभागवत १/२/९-११, ११/५/१२

२) मनुस्मृति ६/६४
४/१७४
४/२४१
४/२३९

## पुरुषार्थ = पुरुष की इच्छा (दुःखनिवृत्ति और सुख प्राप्ति)

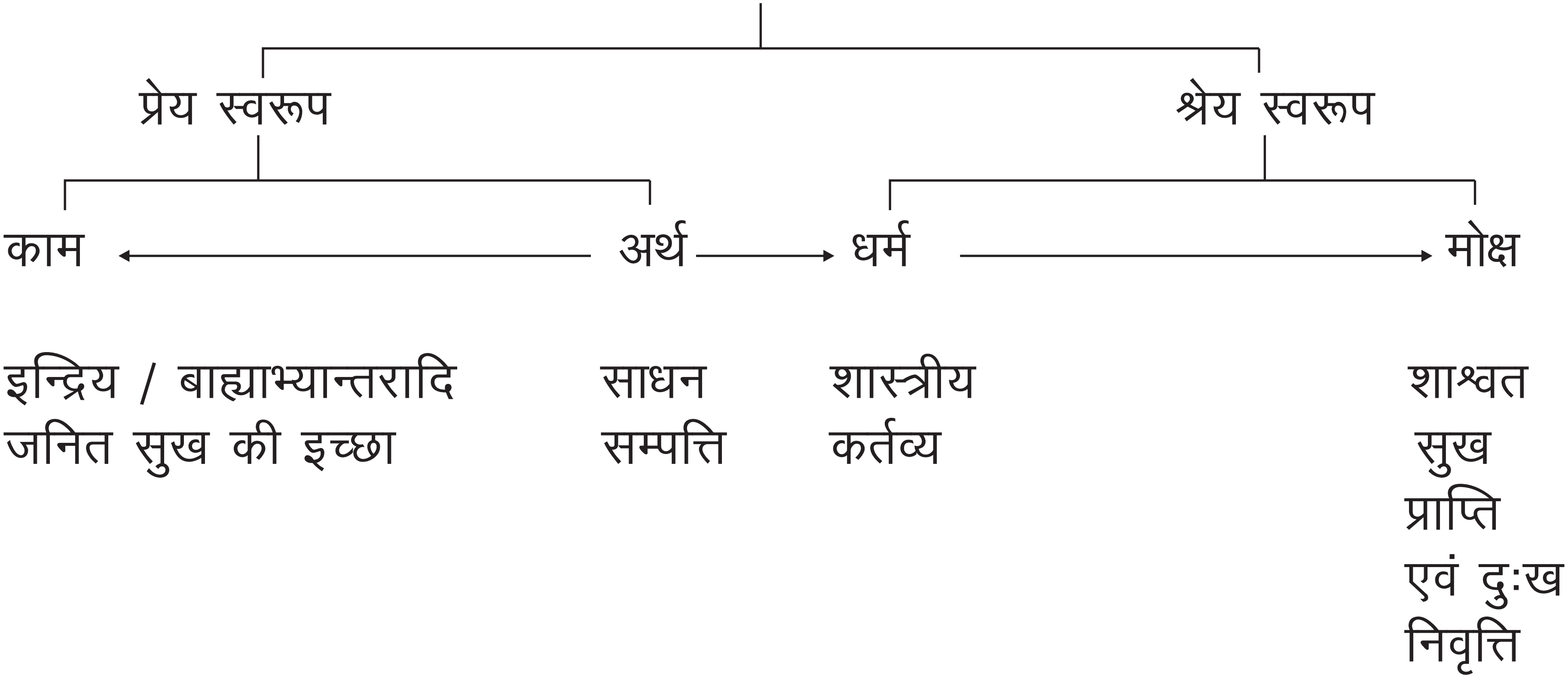

प्रेय स्वरूप

श्रेय स्वरूप

काम ← अर्थ → धर्म → मोक्ष

इन्द्रिय / बाह्याभ्यान्तरादि जनित सुख की इच्छा

साधन सम्पत्ति

शास्त्रीय कर्तव्य

शाश्वत सुख प्राप्ति एवं दुःख निवृत्ति

★ साधन → साध्य

## श्री वल्लभाचार्यानुसारी मोक्ष

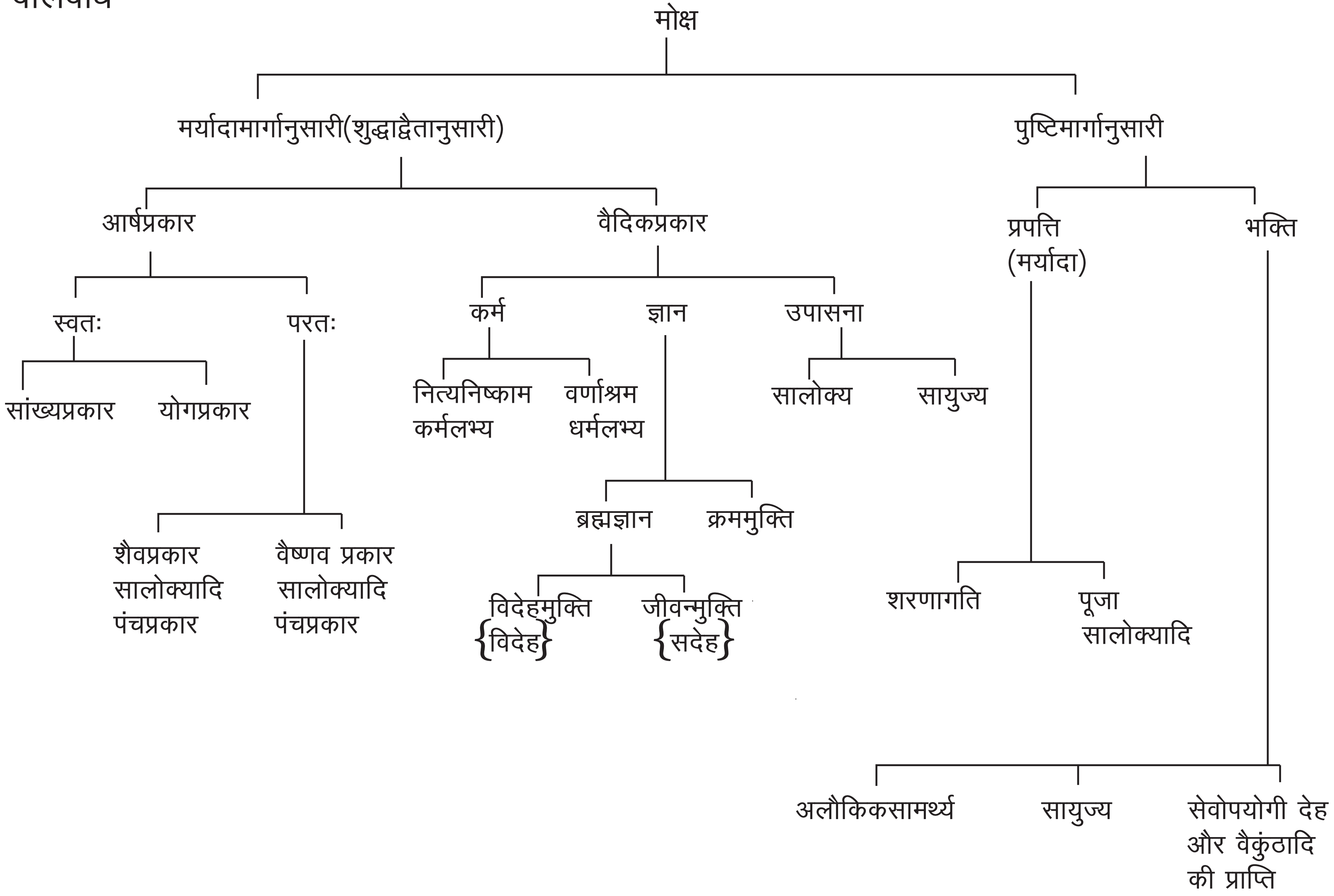
मोक्ष
मर्यादामार्गानुसारी(शुद्धाद्वैतानुसारी)
पुष्टिमार्गानुसारी
आर्षप्रकार
वैदिकप्रकार
प्रपत्ति (मर्यादा)
भक्ति
स्वतः
परतः
कर्म
ज्ञान
उपासना
सांख्यप्रकार
योगप्रकार
नित्यनिष्काम कर्मलभ्य
वर्णाश्रम धर्मलभ्य
सालोक्य
सायुज्य
ब्रह्मज्ञान
क्रममुक्ति
शैवप्रकार सालोक्यादि पंचप्रकार
वैष्णव प्रकार सालोक्यादि पंचप्रकार
विदेहमुक्ति {विदेह}
जीवन्मुक्ति {सदेह}
शरणागति
पूजा सालोक्यादि
अलौकिकसामर्थ्य
सायुज्य
सेवोपयोगी देह और वैकुंठादि की प्राप्ति

# सिद्धान्त मुक्तावली

| | |
|---|---|
| क्रमांक | ३ |
| ग्रन्थ का नाम | सिद्धान्त मुक्तावली |
| श्री महाप्रभुजी के श्री अंग का स्वरूप | हृदय |
| श्लोक संख्या | २१ |
| रचना काल संवत | १५५५ |
| रचना स्थान | जतिपुरा |
| वर्णित विषय | स्व सिद्धान्तरूप कृष्णसेवा एवं ब्रह्मवाद का निरूपण |
| किस भगवदीय के लिए प्रकट हुआ | अच्युतदास सनोढ़िया |
| भागवत स्कन्ध | ६ |
| अवस्था | कुमारावस्था |
| पुष्टिभक्ति का अङ्ग | सेवा |

# सिद्धान्त मुक्तावली

## सिद्धान्त मुक्तावली अन्तर्गत आते विषय

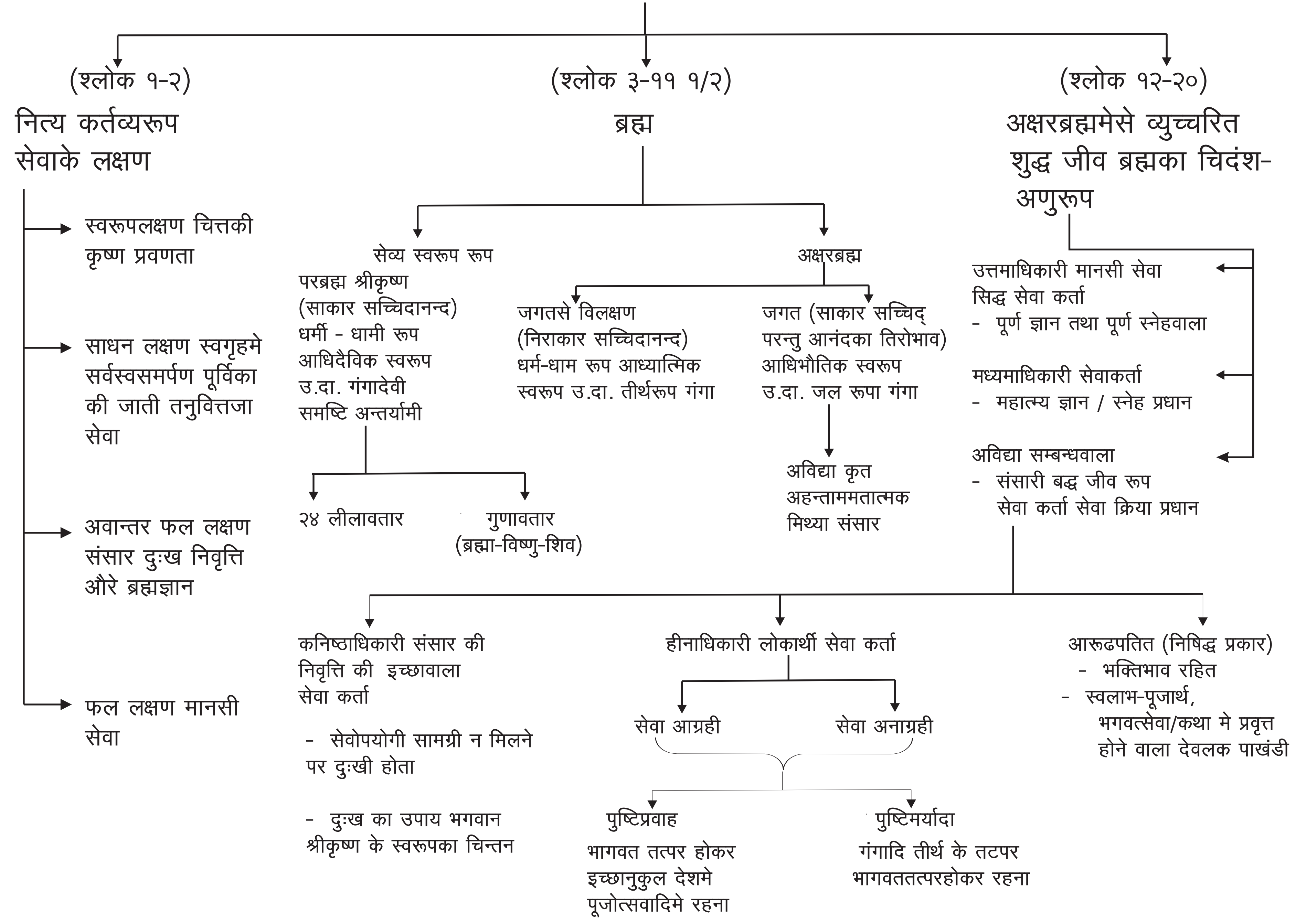

- (श्लोक १-२)
  नित्य कर्तव्यरूप सेवाके लक्षण
  - स्वरूपलक्षण चित्तकी कृष्ण प्रवणता
  - साधन लक्षण स्वगृहमे सर्वस्वसमर्पण पूर्विका की जाती तनुवित्तजा सेवा
  - अवान्तर फल लक्षण संसार दुःख निवृत्ति औरे ब्रह्मज्ञान
  - फल लक्षण मानसी सेवा
- (श्लोक ३-११ १/२)
  ब्रह्म
  - सेव्य स्वरूप रूप
    परब्रह्म श्रीकृष्ण (साकार सच्चिदानन्द) धर्मी - धामी रूप आधिदैविक स्वरूप उ.दा. गंगादेवी समष्टि अन्तर्यामी
    - २४ लीलावतार
    - गुणावतार (ब्रह्मा-विष्णु-शिव)
  - अक्षरब्रह्म
    - जगतसे विलक्षण (निराकार सच्चिदानन्द) धर्म-धाम रूप आध्यात्मिक स्वरूप उ.दा. तीर्थरूप गंगा
    - जगत (साकार सच्चिद् परन्तु आनंदका तिरोभाव) आधिभौतिक स्वरूप उ.दा. जल रूपा गंगा
      - अविद्या कृत अहन्ताममतात्मक मिथ्या संसार
- (श्लोक १२-२०)
  अक्षरब्रह्ममेसे व्युच्चरित शुद्ध जीव ब्रह्मका चिदंश-अणुरूप
  - उत्तमाधिकारी मानसी सेवा सिद्ध सेवा कर्ता
    - पूर्ण ज्ञान तथा पूर्ण स्नेहवाला
  - मध्यमाधिकारी सेवाकर्ता
    - महात्म्य ज्ञान / स्नेह प्रधान
  - अविद्या सम्बन्धवाला
    - संसारी बद्ध जीव रूप सेवा कर्ता सेवा क्रिया प्रधान
    - कनिष्ठाधिकारी संसार की निवृत्ति की इच्छावाला सेवा कर्ता
      - सेवोपयोगी सामग्री न मिलने पर दुःखी होता
      - दुःख का उपाय भगवान श्रीकृष्ण के स्वरूपका चिन्तन
    - हीनाधिकारी लोकार्थी सेवा कर्ता
      - सेवा आग्रही
      - सेवा अनाग्रही
        - पुष्टिप्रवाह
          भागवत तत्पर होकर इच्छानुकुल देशमे पूजोत्सवादिमे रहना
        - पुष्टिमर्यादा
          गंगादि तीर्थ के तटपर भागवततत्परहोकर रहना
    - आरूढपतित (निषिद्ध प्रकार)
      - भक्तिभाव रहित
      - स्वलाभ-पूजार्थ, भगवत्सेवा/कथा मे प्रवृत्त होने वाला देवलक पाखंडी

# पुष्टिप्रवाहमर्यादाभेद

| | |
|---|---|
| क्रमांक | ४ |
| ग्रन्थ का नाम | पुष्टिप्रवाहमर्यादाभेद |
| श्री महाप्रभुजी के श्री अंग का स्वरूप | दक्षिण भुजा |
| श्लोक संख्या | २५ १/२ |
| रचना काल संवत | - |
| रचना स्थान | - |
| वर्णित विषय | मार्गभेद, सर्ग भेद एवं फलभेद का निरूपण |
| किस भगवदीय के लिए प्रकट हुआ | - |
| भागवत स्कन्ध | ३ |
| अवस्था | कुमारावस्था |
| पुष्टिभक्ति का अङ्ग | सेवा |

## पुष्टिप्रवाहमर्यादाभेद

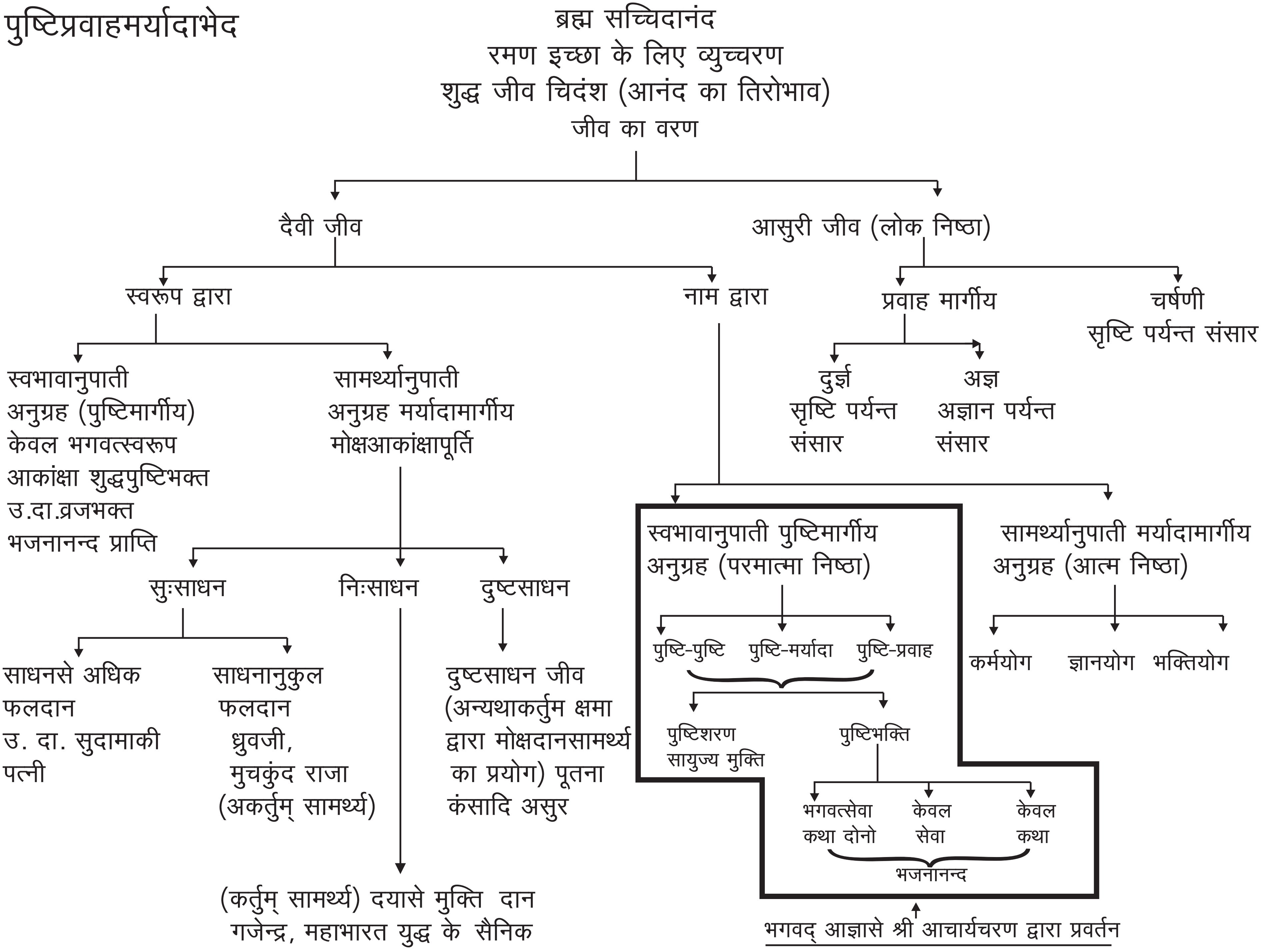
ब्रह्म सच्चिदानंद
रमण इच्छा के लिए व्युच्चरण
शुद्ध जीव चिदंश (आनंद का तिरोभाव)
जीव का वरण
दैवी जीव
आसुरी जीव (लोक निष्ठा)
स्वरूप द्वारा
नाम द्वारा
प्रवाह मार्गीय
चर्षणी
सृष्टि पर्यन्त संसार
स्वभावानुपाती
अनुग्रह (पुष्टिमार्गीय)
केवल भगवत्स्वरूप
आकांक्षा शुद्धपुष्टिभक्त
उ.दा.व्रजभक्त
भजनानन्द प्राप्ति
सामर्थ्यानुपाती
अनुग्रह मर्यादामार्गीय
मोक्षआकांक्षापूर्ति
दुर्ज्ञ
सृष्टि पर्यन्त
संसार
अज्ञ
अज्ञान पर्यन्त
संसार
सुःसाधन
निःसाधन
दुष्टसाधन
साधनसे अधिक
फलदान
उ. दा. सुदामाकी
पत्नी
साधनानुकुल
फलदान
ध्रुवजी,
मुचकुंद राजा
(अकर्तुम् सामर्थ्य)
दुष्टसाधन जीव
(अन्यथाकर्तुम क्षमा
द्वारा मोक्षदानसामर्थ्य
का प्रयोग) पूतना
कंसादि असुर
(कर्तुम् सामर्थ्य) दयासे मुक्ति दान
गजेन्द्र, महाभारत युद्ध के सैनिक
स्वभावानुपाती पुष्टिमार्गीय
अनुग्रह (परमात्मा निष्ठा)
पुष्टि-पुष्टि
पुष्टि-मर्यादा
पुष्टि-प्रवाह
पुष्टिशरण
सायुज्य मुक्ति
पुष्टिभक्ति
भगवत्सेवा
कथा दोनो
केवल
सेवा
केवल
कथा
भजनानन्द
भगवद् आज्ञासे श्री आचार्यचरण द्वारा प्रवर्तन
सामर्थ्यानुपाती मर्यादामार्गीय
अनुग्रह (आत्म निष्ठा)
कर्मयोग
ज्ञानयोग
भक्तियोग

# सिद्धान्त रहस्य

| | |
|---|---|
| क्रमांक | ५ |
| ग्रन्थ का नाम | सिद्धान्त रहस्य |
| श्री महाप्रभुजी के श्री अंग का स्वरूप | दक्षिण चरण |
| श्लोक संख्या | ८ १/२ |
| रचना काल संवत | १५४९ |
| रचना स्थान | गोकुल |
| वर्णित विषय | ब्रह्मसम्बन्ध आज्ञा |
| किस भगवदीय के लिए प्रकट हुआ | दामोदरदास हरसानी गोपालदास(८४/७९) |
| भागवत स्कन्ध | |
| अवस्था | किशोरावस्था |
| पुष्टिभक्ति का अङ्ग | समर्पण |

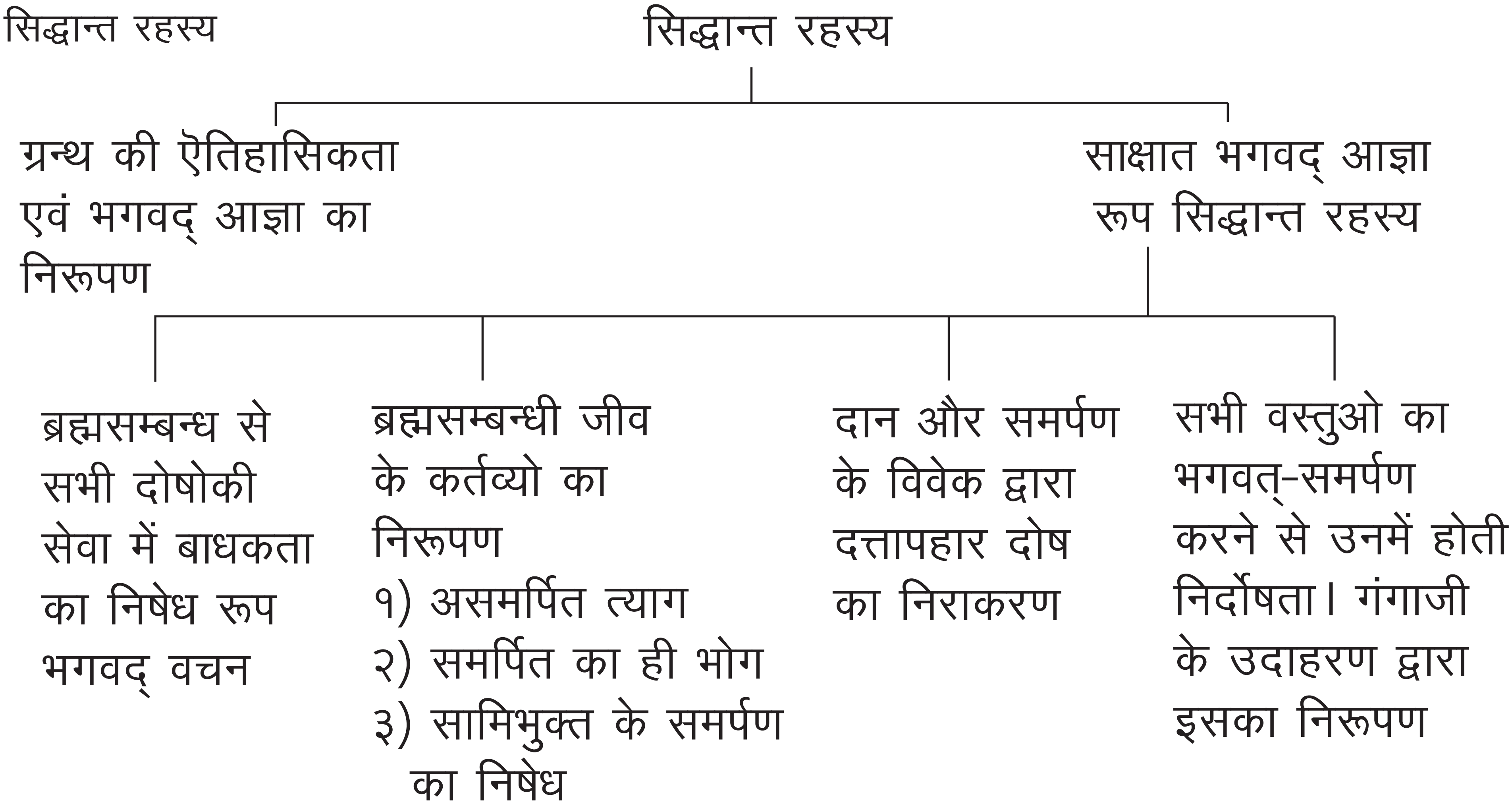

- सिद्धान्त रहस्य
  - ग्रन्थ की ऐतिहासिकता एवं भगवद् आज्ञा का निरूपण
  - साक्षात भगवद् आज्ञा रूप सिद्धान्त रहस्य
    - ब्रह्मसम्बन्ध से सभी दोषोकी सेवा में बाधकता का निषेध रूप भगवद् वचन
    - ब्रह्मसम्बन्धी जीव के कर्तव्यो का निरूपण
      - १) असमर्पित त्याग
      - २) समर्पित का ही भोग
      - ३) सामिभुक्त के समर्पण का निषेध
    - दान और समर्पण के विवेक द्वारा दत्तापहार दोष का निराकरण
    - सभी वस्तुओ का भगवत्-समर्पण करने से उनमें होती निर्दोषता। गंगाजी के उदाहरण द्वारा इसका निरूपण

# नवरत्न

| | |
|---|---|
| क्रमांक | ६ |
| ग्रन्थ का नाम | नवरत्न |
| श्री महाप्रभुजी के श्री अंग का स्वरूप | दक्षिण उरु |
| श्लोक संख्या | ९ |
| रचना काल संवत | १५५८ |
| रचना स्थान | अडेल |
| वर्णित विषय | उद्वेग रूप प्रतिबन्ध का वारण |
| किस भगवदीय के लिए प्रकट हुआ | गोविन्ददुबे सांचोरा, मुरारिआचार्य (२५२/१३०) |
| भागवत स्कन्ध | ९ |
| अवस्था | किशोरावस्था |
| पुष्टिभक्ति का अङ्ग | समर्पण |

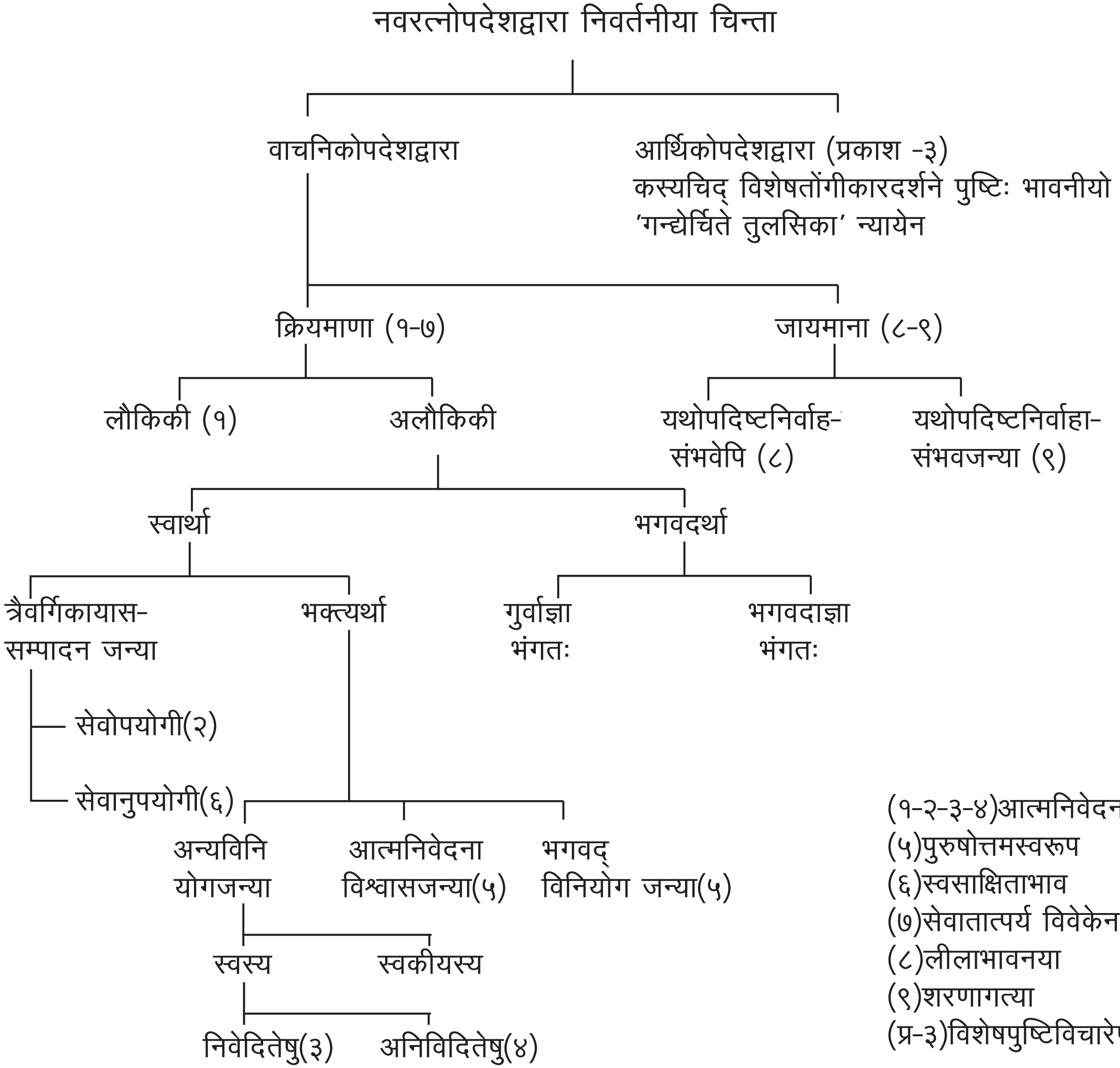
नवरत्नोपदेशद्वारा निवर्तनीया चिन्ता
वाचनिकोपदेशद्वारा
आर्थिकोपदेशद्वारा (प्रकाश -३)
कस्यचिद् विशेषतोंगीकारदर्शने पुष्टिः भावनीयो
'गन्धोर्र्चिते तुलसिका' न्यायेन
क्रियमाणा (१-७)
जायमाना (८-९)
लौकिकी (१)
अलौकिकी
यथोपदिष्टनिर्वाह-संभवेपि (८)
यथोपदिष्टनिर्वाहा-संभवजन्या (९)
स्वार्था
भगवदर्था
त्रैवर्गिकायास-सम्पादन जन्या
भक्त्यर्था
गुर्वाज्ञा भंगतः
भगवदाज्ञा भंगतः
सेवोपयोगी(२)
सेवानुपयोगी(६)
अन्यविनियोगजन्या
आत्मनिवेदना विश्वासजन्या(५)
भगवद् विनियोग जन्या(५)
स्वस्य
स्वकीयस्य
निवेदितेषु(३)
अनिविदितेषु(४)

(१-२-३-४)आत्मनिवेदन चिन्तनेन
(५)पुरुषोत्तमस्वरूप
(६)स्वसाक्षिताभाव
(७)सेवातात्पर्य विवेकेन
(८)लीलाभावनया
(९)शरणागत्या
(प्र-३)विशेषपुष्टिविचारेणेर्ष्यात्यागेन

# अन्तःकरण प्रबोध

| | |
|---|---|
| क्रमांक | ७ |
| ग्रन्थ का नाम | अन्तःकरण प्रबोध |
| श्री महाप्रभुजी के श्री अंग का स्वरूप | नाभि |
| श्लोक संख्या | १० १/२ |
| रचना काल संवत | १५२७ |
| रचना स्थान | अडेल |
| वर्णित विषय | भगवद् अपराध तथा पश्चाताप रूप उद्वेग का |
| किस भगवदीय के लिए प्रकट हुआ | खुदके लिये, एक विरक्त वैष्णव(२५२/१६२) |
| भागवत स्कन्ध | ५ |
| अवस्था | किशोरावस्था |
| पुष्टिभक्ति का अङ्ग | समर्पण |

## अन्तःकरण प्रबोध

### अन्तःकरण

श्री महाप्रभुजी खुद के अन्तःकरण को निमित्त बनाकर सभी पुष्टिजीवो के अन्तःकरण को प्रबोध कर रहे है

### प्रबोध

आत्मसमर्पण के बाद भगवान की सेवा एवं आज्ञापालन से अतिरिक्त अन्य कोइ भी कर्तव्य पुष्टिजीव का हो नहि सकता है। इसके तीन हेतु

१) भगवान सत्य संकल्प है
२) अन्यथा स्वामी द्रोह का प्रसंग उपस्थित होगा
३) भगवान स्वामी होने के कारण खुदही फलदान करेंगे

जीव में विश्वास स्थापित करने के लिये श्रीआचार्यचरणद्वारा खुदके साथ घटित आख्यायिका वर्णन

आज्ञाभंग या भगवद् अपराध में पश्चाताप नहि करने के कारण

१) चाण्डाली राजपत्नी के उदाहरण से पुष्टिजीव की स्थिति स्पष्ट करना
२) पुष्टिजीव प्रभु का सेवक है
३) कृष्ण अलौकिक स्वामी होने के कारण सदा कल्याण ही करते है
४) सर्वसमर्पित किया होने के कारण भगवद् आज्ञा पालन में ही कृतार्थता
५) खुद के देह के साथ मोह जन्य व्यवहार देह के स्वामी श्रीकृष्ण की अप्रसन्नता का कारण
६) आत्मसमर्पण रहित अन्य लौकिकजन की स्थिति जैसी खुद की स्थिति होती तो क्या होता! ऐसा विचार करना

# विवेकधैर्याश्रय

| | |
|---|---|
| क्रमांक | ८ |
| ग्रन्थ का नाम | विवेकधैर्याश्रय |
| श्री महाप्रभुजी के श्री अंग का स्वरूप | वाम भुजा |
| श्लोक संख्या | १७ |
| रचना काल संवत | - |
| रचना स्थान | - |
| वर्णित विषय | विवेक-धैर्य-आश्रय स्वरूप एवं साधन का निरूपण |
| किस भगवदीय के लिए प्रकट हुआ | - |
| भागवत स्कन्ध | ७ |
| अवस्था | किशोरावस्था |
| पुष्टिभक्ति का अङ्ग | आश्रय |

# शरणागति
## (भगवन्माहात्म्य बोध के साथ निःसाधनता / निःसाधनता भावना)
## शरणधर्म

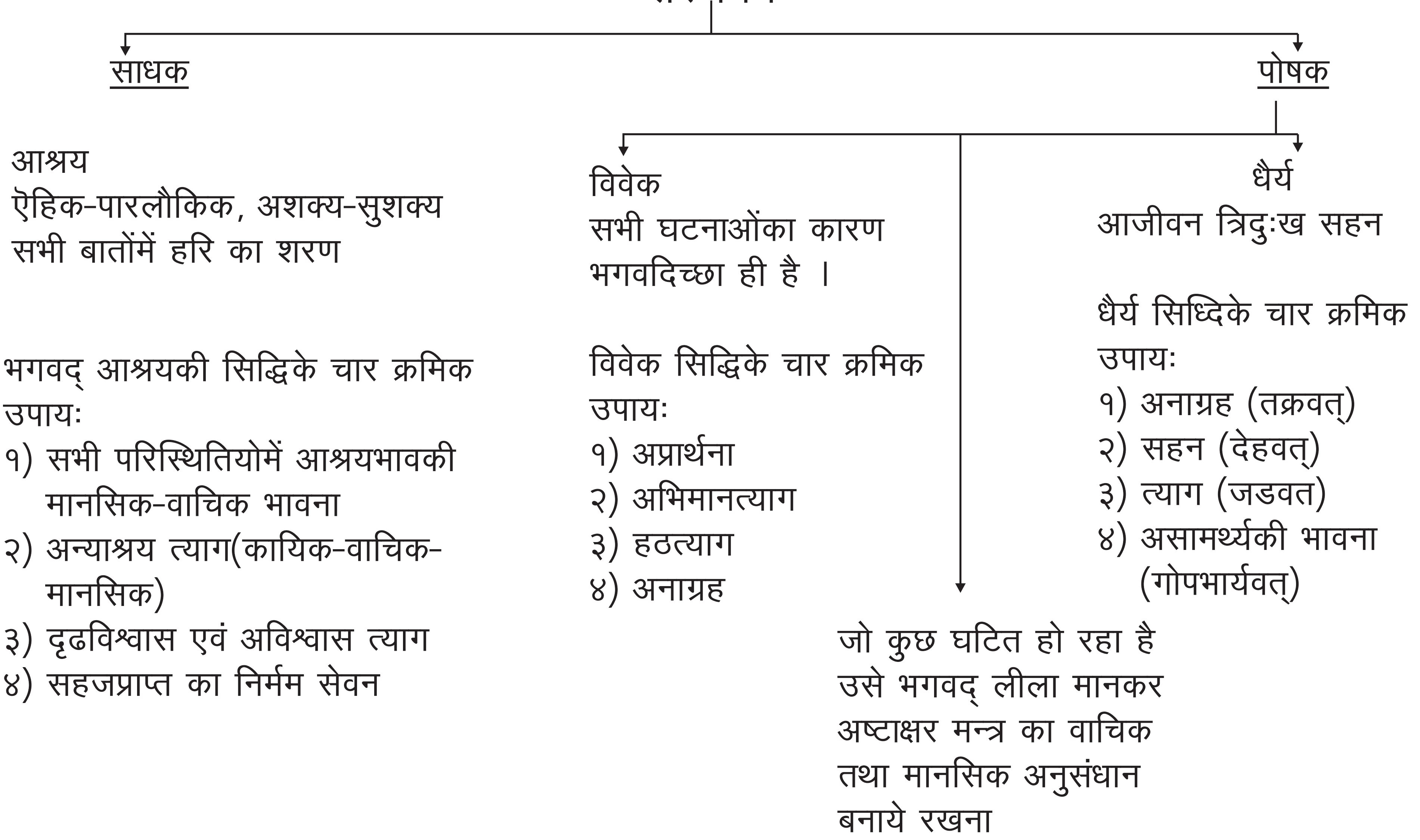

### साधक

आश्रय
ऐहिक-पारलौकिक, अशक्य-सुशक्य
सभी बातोंमें हरि का शरण

भगवद् आश्रयकी सिद्धिके चार क्रमिक उपायः
१) सभी परिस्थितियोमें आश्रयभावकी मानसिक-वाचिक भावना
२) अन्याश्रय त्याग(कायिक-वाचिक-मानसिक)
३) दृढविश्वास एवं अविश्वास त्याग
४) सहजप्राप्त का निर्मम सेवन

### पोषक

विवेक
सभी घटनाओंका कारण भगवदिच्छा ही है ।

विवेक सिद्धिके चार क्रमिक उपायः
१) अप्रार्थना
२) अभिमानत्याग
३) हठत्याग
४) अनाग्रह

जो कुछ घटित हो रहा है
उसे भगवद् लीला मानकर
अष्टाक्षर मन्त्र का वाचिक
तथा मानसिक अनुसंधान
बनाये रखना

धैर्य
आजीवन त्रिदुःख सहन

धैर्य सिध्दिके चार क्रमिक उपायः
१) अनाग्रह (तक्रवत्)
२) सहन (देहवत्)
३) त्याग (जडवत)
४) असामर्थ्यकी भावना (गोपभार्यवत्)

---

ग्रन्थ सन्दर्भ :
कृष्णाश्रय, विवेक धैर्याश्रय, नवरत्न, पंचश्लोकी, त. दि. नि., साधनप्रकरण

# कृष्णाश्रय

| | |
|---|---|
| क्रमांक | ९ |
| ग्रन्थ का नाम | कृष्णाश्रय |
| श्री महाप्रभुजी के श्री अंग का स्वरूप | वाम चरण |
| श्लोक संख्या | ११ |
| रचना काल संवत | १५७० |
| रचना स्थान | अडेल |
| वर्णित विषय | श्री कृष्ण से अतिरिक्त अन्य साधनो की विफलता का निरुपण |
| किस भगवदीय के लिए प्रकट हुआ | बूलामिश्र |
| भागवत स्कन्ध | १२ |
| अवस्था | यौवनावस्था |
| पुष्टिभक्ति का अङ्ग | आश्रय |

कृष्णाश्रय

- श्रीकृष्ण
  परंब्रह्म परमात्मा
  भगवान श्रीकृष्ण
- आश्रय(सर्वाधार)
  - धर्म के ६ अङ्ग की विफलता के कारण उनकी फल में असाधकता एवं ६ रूपो में कृष्णाश्रय की ही साधकता
    1. १) कृष्ण सेवा-कथा काल
    2. २) कृष्ण मन्दिर रूप देश
    3. ३) कृष्ण में समर्पित द्रव्य
    4. ४) कृष्ण के दास रूप कर्ता
    5. ५) कृष्ण नाम रूप मन्त्र
    6. ६) कृष्ण सेवा रूप कर्म
  - चतुर्विध पुरुषार्थ रूप कृष्णाश्रय एवं कर्म-ज्ञान-भक्ति-प्रपत्ति के दृष्टि से भी श्रीकृष्णाश्रय की फल साधकता
  - कृष्णाश्रय स्तोत्रके पाठ का फल कृष्णाश्रय सिद्धि

# चतुश्लोकी

| | |
|---|---|
| क्रमांक | १० |
| ग्रन्थ का नाम | चतुश्लोकी |
| श्री महाप्रभुजी के श्री अंग का स्वरूप | दक्षिण कर्ण |
| श्लोक संख्या | ४ |
| रचना काल संवत | १५८० |
| रचना स्थान | काशी |
| वर्णित विषय | पुष्टिमार्गीय चतुर्विध पुरुषार्थ का निरूपण |
| किस भगवदीय के लिए प्रकट हुआ | राणाव्यास, भगवानदास सांचोरा(८४/५३) |
| भागवत स्कन्ध | ८ |
| अवस्था | यौवनावस्था |
| पुष्टिभक्ति का अङ्ग | भक्ति |

# चतुश्लोकी

पुष्टिभक्ति मार्गमें प्रमाण-प्रमेय-साधन-फल और धर्मादि चतुर्विध पुरुषार्थ भी भगवान श्रीकृष्ण ही।

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रमाण | साक्षात् भगवद्‌वाणी | धर्म | दास्य धर्म रूप हरि की सेवा |
| प्रमेय | भगवान श्रीकृष्ण | अर्थ | भगवान श्रीकृष्ण |
| साधन | प्रेम लक्षणा भक्ति | काम | हरि दर्शन की कामना |
| फल | प्रभु की प्राप्ति | मोक्ष | सर्वात्मना कृष्णका बनपाना |

ग्रन्थ सन्दर्भ : त. दी. नि. - १/४
त. दी. नि. - २/२२१, २२२, २२३
भागवत - ११/२९/८-२१
११/२/३४-३५-३६
६/११/२४-२७

# भक्तिवर्धिनी

| | |
|---|---|
| क्रमांक | ११ |
| ग्रन्थ का नाम | भक्तिवर्धिनी |
| श्री महाप्रभुजी के श्री अंग का स्वरूप | दक्षिण ऊरु |
| श्लोक संख्या | ११ |
| रचना काल संवत | १५५२ |
| रचना स्थान | गुजरात |
| वर्णित विषय | भक्ति को बढ़ाने के उपायो का निरुपण |
| किस भगवदीय के लिए प्रकट हुआ | पुरुषोत्तम जोषी |
| भागवत स्कन्ध | ९ |
| अवस्था | यौवनावस्था |
| पुष्टिभक्ति का अङ्ग | भक्ति |

# भक्तिमार्गीय जीव (पांच प्रकार)

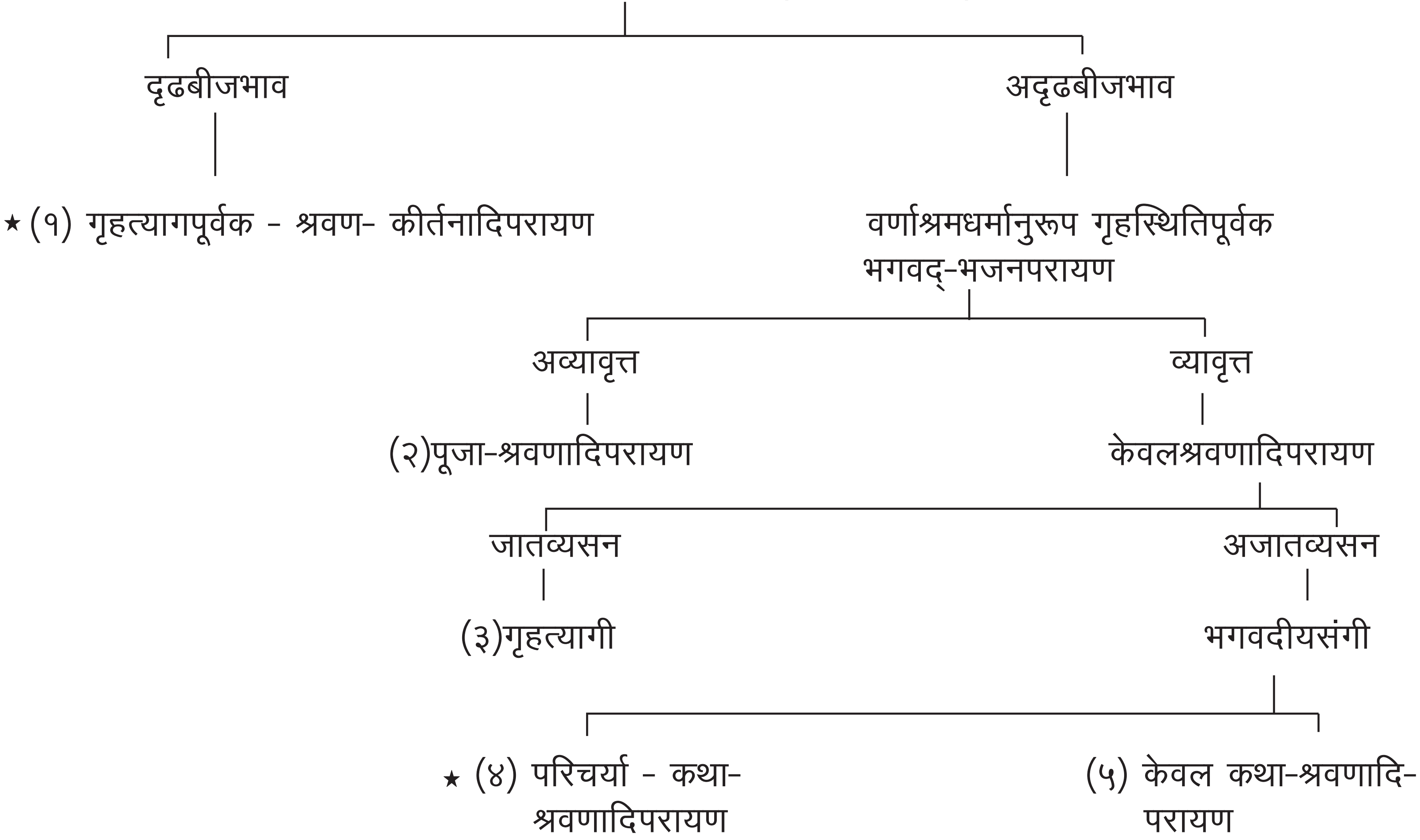
दृढबीजभाव
अदृढबीजभाव
★ (१) गृहत्यागपूर्वक - श्रवण- कीर्तनादिपरायण
वर्णाश्रमधर्मानुरूप गृहस्थितिपूर्वक भगवद्-भजनपरायण
अव्यावृत्त
व्यावृत्त
(२)पूजा-श्रवणादिपरायण
केवलश्रवणादिपरायण
जातव्यसन
अजातव्यसन
(३)गृहत्यागी
भगवदीयसंगी
★ (४) परिचर्या - कथा-श्रवणादिपरायण
(५) केवल कथा-श्रवणादि-परायण

★ ये दो प्रकार अंत में एक ही हो जाते हैं ।

# जलभेद

| | |
|---|---|
| क्रमांक | १२ |
| ग्रन्थ का नाम | जलभेद |
| श्री महाप्रभुजी के श्री अंग का स्वरूप | कण्ठ |
| श्लोक संख्या | २१ |
| रचना काल संवत | - |
| रचना स्थान | - |
| वर्णित विषय | भगवत्कथा करने वाले वक्ता के भेद |
| किस भगवदीय के लिए प्रकट हुआ | - |
| भागवत स्कन्ध | १ |
| अवस्था | प्रौढावस्था |
| पुष्टिभक्ति का अङ्ग | भक्ति |

# वक्ता के भेद

## अप्रकीर्ण (वर्गीकृत) (१-१९)

## विप्रकीर्ण (अवर्गीकृत) (२०)

### (क) विषयासक्त वक्ता (निन्द्य)(१-५)

| वर्ग | उदाहरण |
|---|---|
| १)गायक | कूपजल |
| २)पौराणिक | नहेर |
| ३)जीविकार्थ पौराणिकवृत्ति | खेत की नहेर |
| ४)वैश्या मद्यपान से युक्त वक्ता | प्रदररूपा गंदाजल |
| ५)आजिविकार्थ गायक/पोराणिक | गंदी नाली का जल |

### (ख) मुमुक्षु वक्ता(६-१८)

**कर्ममार्गीयः**

| | |
|---|---|
| ६)निरन्तर शास्त्रीय अभ्यासयुक्त | जलाशय |
| ७)संदेहवारकता युक्त | पीनेलायक जलाशय |
| ८)प्रेमयुक्त | सुन्दर कमलयुक्त जलाशय |
| ९)अल्पपश्रुत क्षेमयुक्त | छोटे स्वच्छ जलाशय |
| १०)अल्पश्रुत एवं प्रेम का अभाव | छोटे तालाब |

**ज्ञानमार्गीयः**

| | |
|---|---|
| ११)योगध्यान युक्त ज्ञान | वर्षा जल |
| १२)तप-ज्ञान युक्त | स्वेद जल |
| १३)अलौकिक ज्ञानयुक्त | झरणे |

**उपासनामार्गीयः**

| | |
|---|---|
| १४)सकाम उपासक | ओस जल |
| १५)अल्पप्रेमयुक्त कृष्ण उपासना | बरसाती नदी का जल |
| १६)प्रेमयुक्त कृष्ण उपासना | बारहमासी नदी |
| १७)संग से प्रभावित कृष्णोपासना | उद्गमस्थान-वाली नदी |
| १८)भक्तिमार्गीय मोक्षकारी | समुद्रगामिनी महानदी |

### (ग) विमुक्त(१९)

| | |
|---|---|
| १)कृष्णको महापुरुष माननेवाले | (समुद्रजल) लवणयुक्तजल |
| २)परमात्मा अप्राकृत किन्तु अवतार प्राकृत | गन्ने के रस |
| ३)मायावादी | सुरा |
| ४)भगवान के दयालु इत्यादि गुणो पर भार देनेवाले | घी के स्वादयुक्त |
| ५)भगवान के सर्वदा, सर्वशक्तिमान इत्यादि गुणोपर भार देनेवाले | दुध के स्वादयुक्त |
| ६)अवतार का धर्मस्थापनारूप मर्यादितप्रयोजन मानने वाले | दधिमंड |
| ७)पूर्ण भगवदीय | शुद्ध-अमृतोद |

# पञ्च पद्यानि

| | |
|---|---|
| क्रमांक | १३ |
| ग्रन्थ का नाम | पञ्च पद्यानि |
| श्री महाप्रभुजी के श्री अंग का स्वरूप | वाम कर्ण |
| श्लोक संख्या | ५ |
| रचना काल संवत | - |
| रचना स्थान | - |
| वर्णित विषय | श्रोता के भेद |
| किस भगवदीय के लिए प्रकट हुआ | - |
| भागवत स्कन्ध | १ |
| अवस्था | प्रौढावस्था |
| पुष्टिभक्ति का अङ्ग | आश्रय |

## पञ्च पद्यानि
## श्रोता के भेद

- भक्तिमार्गीय
  - उत्तमाधिकारि
    लोकिक-वैदिक के पूर्ण वैराग्य सहित भगवदासक्ति
  - मध्यमाधिकारि
    अर्थनिष्ठाप्रबल एवं कथा काल में ही भक्ति रस का आवेश
  - कनिष्ठाधिकारि
    शब्दनिष्ठाप्रबल एवं कथा काल में ही भक्ति रस का आवेश
- प्रपत्ति मार्गीय
  उत्तमाधिकारि
  धर्म के ६ अंङ्गो का साधन रूप से अन्याश्रय छोडकर भगवान में ही अनन्याश्रय

# संन्यासनिर्णय

| | |
|---|---|
| क्रमांक | १४ |
| ग्रन्थ का नाम | संन्यासनिर्णय |
| श्री महाप्रभुजी के श्री अंग का स्वरूप | ललाट |
| श्लोक संख्या | २२ |
| रचना काल संवत | १५५१ |
| रचना स्थान | बदरिकाश्रम |
| वर्णित विषय | भक्तिमार्गीय त्याग का निरूपण |
| किस भगवदीय के लिए प्रकट हुआ | नरहरि संन्यासी, एकविरक्त(२५२/६८) |
| भागवत स्कन्ध | ११ |
| अवस्था | प्रौढावस्था |
| पुष्टिभक्ति का अङ्ग | सेवा |

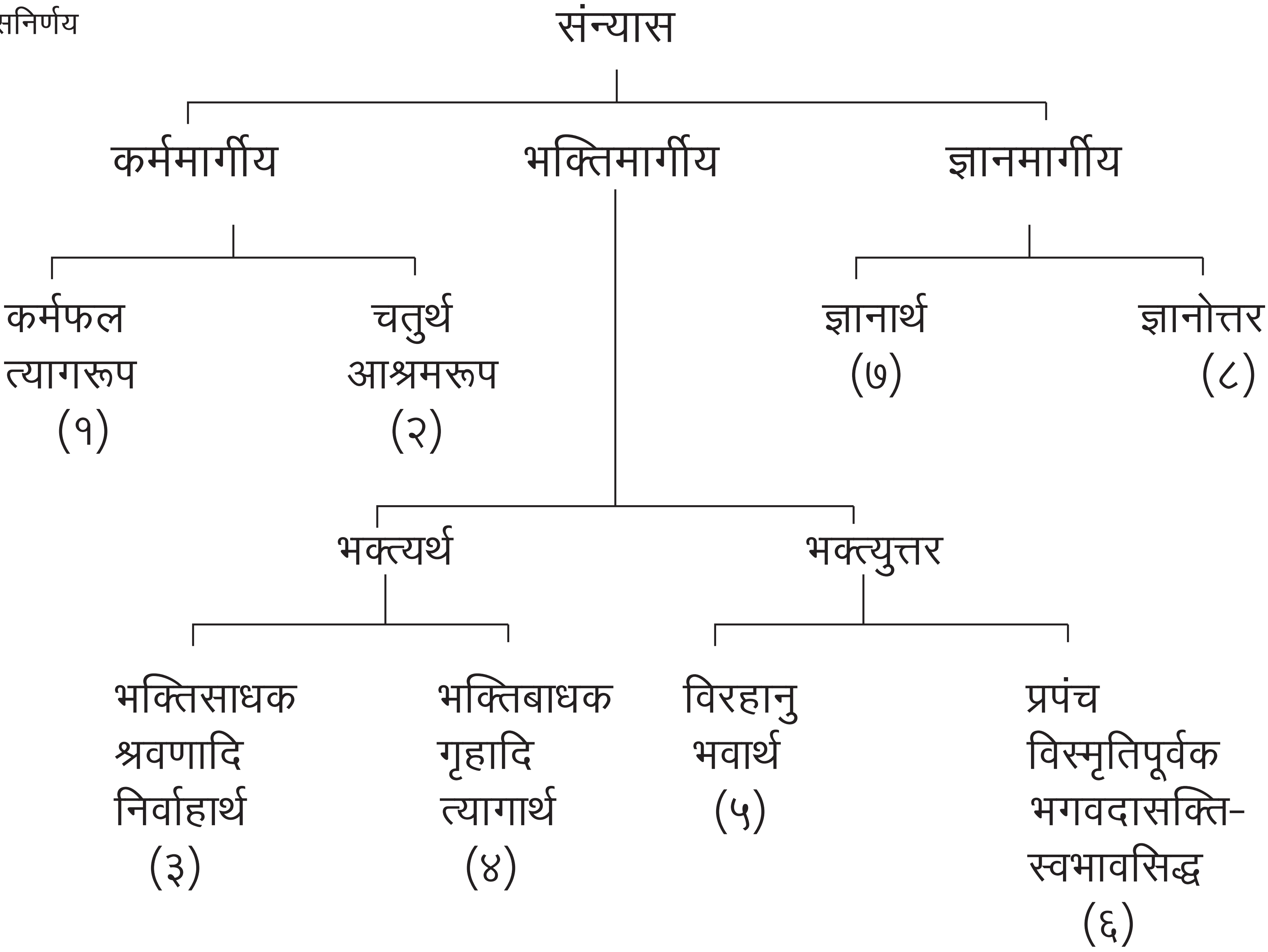

- संन्यास
  - कर्ममार्गीय
    - कर्मफल त्यागरूप (१)
    - चतुर्थ आश्रमरूप (२)
  - भक्तिमार्गीय
    - भक्त्यर्थ
      - भक्तिसाधक श्रवणादि निर्वाहार्थ (३)
      - भक्तिबाधक गृहादि त्यागार्थ (४)
    - भक्त्युत्तर
      - विरहानुभवार्थ (५)
      - प्रपंच विस्मृतिपूर्वक भगवदासक्ति-स्वभावसिद्ध (६)
  - ज्ञानमार्गीय
    - ज्ञानार्थ (७)
    - ज्ञानोत्तर (८)

# निरोधलक्षण

| | |
|---|---|
| क्रमांक | १५ |
| ग्रन्थ का नाम | निरोधलक्षण |
| श्री महाप्रभुजी के श्री अंग का स्वरूप | मस्तक |
| श्लोक संख्या | २० |
| रचना काल संवत | १५६६ |
| रचना स्थान | - |
| वर्णित विषय | निरोध के लक्षण एवं उपाय का निरूपण |
| किस भगवदीय के लिए प्रकट हुआ | राजा दुवे, माधव दुवे |
| भागवत स्कन्ध | १० |
| अवस्था | वृद्धावस्था |
| पुष्टिभक्ति का अङ्ग | समर्पण |

# निरोधलक्षण (फल)

किसका निरोध? = भक्तो का निरोध
किसमें निरोध? = भगवानमे निरोध
कहांसे निरोध? = जगत रूप अपादान से निरोध

## स्वरूप लक्षण

प्रपंच विस्मृति पूर्वक भगवदासक्ति ऐसी भगवानमे आसक्ति यह जीव धर्म है

## कार्य लक्षण

भगवत्संयोगमें परमानन्दकी अनुभूति और एक क्षण भी भगवद् वियोग सहन न कर पाना ऐसी स्थिति हो उसे निरोध का कार्य माना जाता हैं

## कारण लक्षण

परब्रह्म का खुदकी सभी शक्ति के साथ स्थित होना इसमें निरोध के कारण लक्षण का निरूपण हुआ है। इस जगत में भगवान के द्वारा की जाती लीला जिसके कारण भक्त प्रपञ्चको भूलाकर भगवान में आसक्त हो जाय वैसी भगवान की लीला निरोध होने में कारण हैं। यह लीला भगवद् धर्म है

त्रिविध भक्त होने के कारण लीला भी त्रिविध (दशम स्कन्धोक्त)

| तामस | राजस | सात्विक |
|---|---|---|
| (प्रमाण-प्रमेय-साधन-फल) | (प्रमाण-प्रमेय-साधन-फल) | (प्रमेय-साधन-फल) |
| व्रजलीला | मथुरालीला | द्वारिकालीला |

★ उपराक्त त्रिविध लीला ओ के द्वारा भक्त को निर्गुणावस्था की प्राप्ति

★ प्रमाण लीला से प्रेम
प्रमेय लीला से आसक्ति
साधन लीला से व्यसन
फल लीला से व्यसनोत्तर फल की प्राप्ति

## प्रयोजन लक्षण

- अलौकिक सामर्थ्य
- सायुज्य
- वैकुंठादिमें सेवोपयोगि देह

# सेवाफल

| | |
|---|---|
| क्रमांक | १६ |
| ग्रन्थ का नाम | सेवाफल |
| श्री महाप्रभुजी के श्री अंग का स्वरूप | वाम अंग |
| श्लोक संख्या | ७ १/२ |
| रचना काल संवत | १५८२ |
| रचना स्थान | आगरा |
| वर्णित विषय | सेवा में अनुभूत होते फल एवं उसमे आते प्रतिबन्धो का निरूपण |
| किस भगवदीय के लिए प्रकट हुआ | विष्णुदास छीपा |
| भागवत स्कन्ध | १२ |
| अवस्था | वृद्धावस्था |
| पुष्टिभक्ति का अङ्ग | सेवा |

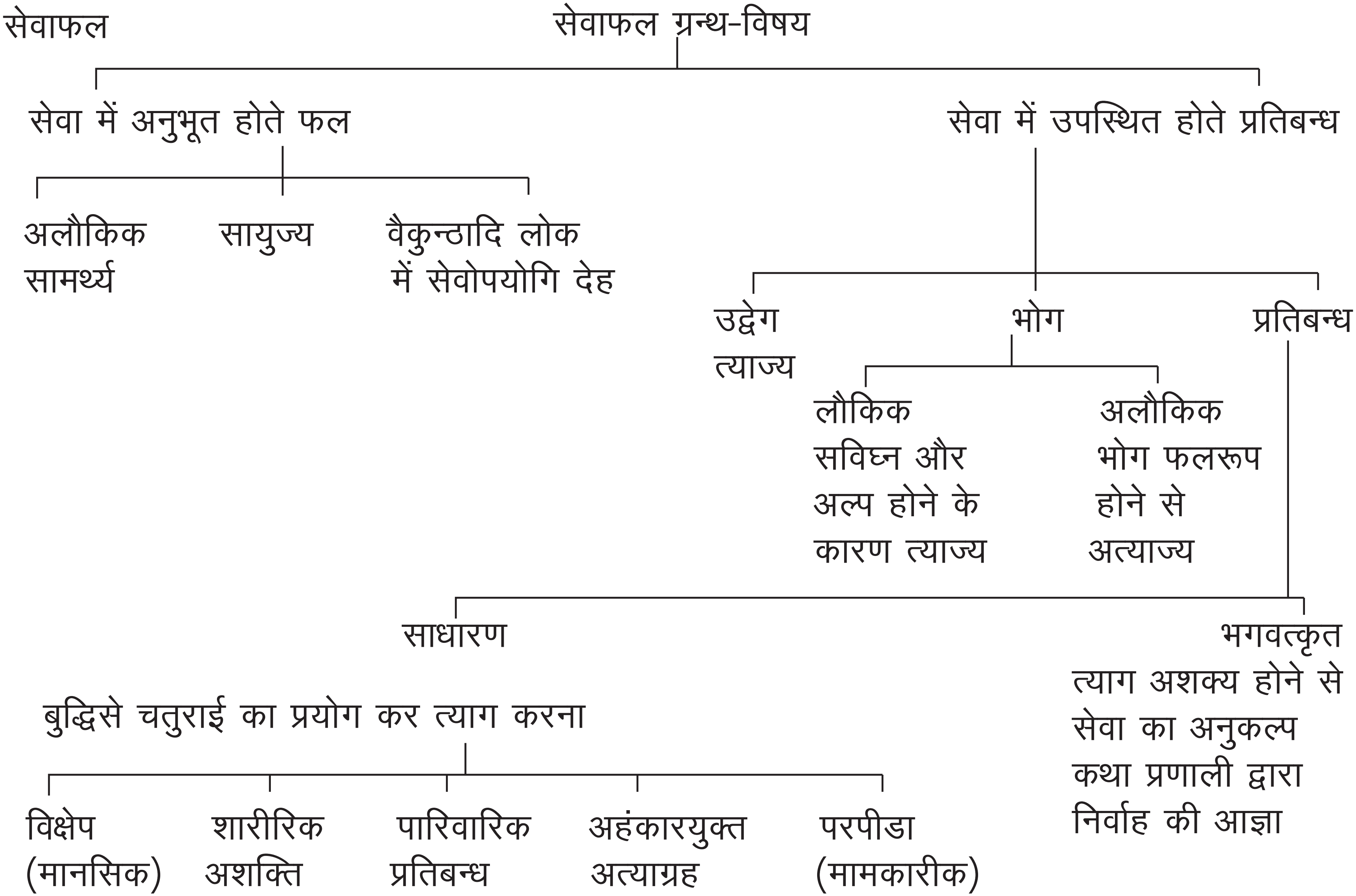
सेवाफल ग्रन्थ-विषय
सेवा में अनुभूत होते फल
सेवा में उपस्थित होते प्रतिबन्ध
अलौकिक सामर्थ्य
सायुज्य
वैकुन्ठादि लोक में सेवोपयोगि देह
उद्वेग त्याज्य
भोग
प्रतिबन्ध
लौकिक सविघ्न और अल्प होने के कारण त्याज्य
अलौकिक भोग फलरूप होने से अत्याज्य
साधारण
भगवत्कृत त्याग अशक्य होने से सेवा का अनुकल्प कथा प्रणाली द्वारा निर्वाह की आज्ञा
बुद्धिसे चतुराई का प्रयोग कर त्याग करना
विक्षेप (मानसिक)
शारीरिक अशक्ति
पारिवारिक प्रतिबन्ध
अहंकारयुक्त अत्याग्रह
परपीडा (मामकारीक)